Pragya Shikshan Shodh Rachna

Vol. II No. 8 (2019)
ISSN 2319-8079
UGC APPROVED RESEARCH JOURNAL NO. 63984
JULY - DECEMBER 2019

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 नीता गुप्ता
सहायक प्रोफेसर
आईएफटीआईएम विश्वविद्यालय
मुरादाबाद (उ0 प्र0)

बिन्दु सिंह
शोधार्थिनी (शिक्षा शास्त्र)
आईएफटीआईएम विश्वविद्यालय
मुरादाबाद (उ0 प्र0)

प्रस्तावना :–

शिक्षा की दिशा आध्यात्मवाद से जहाँ भौतिकवाद की ओर परिवर्तित हुई, तो शिक्षक का स्थान, शिक्षा का प्रशासन तथा व्यवस्था भी इससे प्रभावित हुई। परन्तु इन परिस्थितियों में शिक्षिकाओं को कार्य–सन्तुष्टि भी प्रभावित हुई है। जब तक एक शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं होगा, तब तक वह अपने कार्य के प्रति पूर्ण रूप से कर्तव्यनिष्ठ नहीं हो सकता।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

आज शिक्षा के स्तर को सुधारने का प्रयास तो किया जा रहा है, लेकिन असल समस्या को सुधारने की पहल कहीं से नहीं हो रही है। यह बात अलग है कि एक समय था, जब सरकारी शिक्षण संस्थाओं से निकले विद्यार्थी ही देश के शीर्ष पदों पर पहुँचते थे। कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों ने सीमित संसाधनों में छात्रों के बौद्धिक स्तर एवं व्यक्तित्व में विकास किया। आज की परिस्थितियों में यह बेहद दुष्कर है, और ऐसे में मध्यम और निम्न वर्ग के लोगों के लिए शिक्षा का नया क्षितिज उनकी पहुँच से दूर होना स्वाभाविक है। उपरोक्त शैक्षिक परिस्थितियों के कारण एक शिक्षक को भी इन से दो--चार होना पड़ता है, क्योंकि जब विद्यालय का वातावरण अच्छा होता है तभी एक शिक्षक अपना शिक्षण–कार्य पूर्ण रूप से कर सकेगा।

परन्तु प्रबन्धन आदि की समस्याओं के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं से शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि प्रभावित हो जाती है, क्योंकि गैरसरकारी विद्यालयों में शिक्षिकाओं को अच्छा वेतन नहीं मिलता है और न ही उनको सरकारी शिक्षकों की तरह अन्य वेतन–भत्ते प्राप्त होते हैं, जिस कारण गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि प्रभावित होती है। इस कारण वे अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर पाती हैं।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :–

प्रस्तुत शोध विषय पर जिन शोधार्थियों ने शोध किया है, उनमें सक्सेना, राजेश (2003), त्रिपाठी, एल0ए0के0 (2006), सिंह, एच0एल0 (2008), सिंह, अजीत (2011), चौधरी, एस0 (2012), मेहराज, दिनदार (2013),कुसुम चन्दाना (2014), एल रालटे (2000), अजहर तौसीफ (2015) तथा सैफी, एम0 (2016), पमेला रबुरू (2017) प्रमुख हैं।

समस्या कथनः–"माध्यमिक विद्यालयों में

कार्यरत शिक्षिकाओं की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन''

शोध विधिः– वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरणः– डॉ. (श्रीमती) मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित मापनी

न्यादर्शः– वर्तमान शोध हेतु 100 शिक्षिकाओं को लिया गया है।

चर :– स्वतन्त्र चर –कार्य–सन्तुष्टि, आश्रित चर– शिक्षिकायें

अध्ययन के उद्देश्य –

- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग के शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग के शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनायें –

1–माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

2–माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

3–माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी शहरी शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

4–माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी कला वर्ग के शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

5–माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी विज्ञान वर्ग के शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पनाओं की व्याख्या एवं विश्लेषण :

तालिका संख्या 1 के अनुसार सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 186.07 व 164.59,(7.62 व 6.05) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य df 98 पर 3.16 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 1 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या 2 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 185 व 165.26 (6.84 व 6.05) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य df 48 पर 3.16 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 2 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–3 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 180.98 व 160.66 (7.62 व 6.05) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य

तालिका संख्या–1

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर–सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शिक्षिकायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	40	186.07	7.62	21.48	3.16	पाया जाता है।
गैर सरकारी	60	164.59	6.05			

df 48 पर 3.16 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 3 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या 4 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला

तालिका संख्या 2

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

ग्रामीण शिक्षिकायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	23	185.68	6.84	20.42	2.73	पाया जाता है।
गैर सरकारी	27	165.26	4.89			

0.01 स्तर पर * = 2.64,

तालिका संख्या 3

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शहरी शिक्षिकायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	27	180.98	7.01	20.38	3.06	पाया जाता है।
गैरसरकारी	23	160.66	5.11			

0.01 स्तर पर * = 2.64,

शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 185.60 व 165.54 (7.45 व 5.90) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य df 48 पर 3.16 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 4 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–5 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला

तालिका संख्या 4

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

कला वर्ग की शिक्षिकायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	24	185.60	7.45	20.04	2.68	पाया जाता है।
गैर सरकारी	26	165.54	5.90			

0.01 स्तर पर * = 2.64,

शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 190.08 व 165.67 (6.92 व 5.27) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य df 48 पर 3.16 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 5 स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर

तालिका संख्या–5

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञानवर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाएं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	23	190.08	6.92	25.38	3.23	पाया जाता है।
गैर सरकारी	27	165.67	5.27			

0.01 स्तर पर * = 2.64,

सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

2. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
4. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
5. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य–सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

: सन्दर्भ–सूची :

1. भार्गव, महेश (1977) आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन आगरा, हर प्रसाद भार्गव, पृष्ठ संख्या–72
2. मुहम्मद सुलेमान (1995) शोध प्रणाली विज्ञान पटना शुक्ल बल डिपो, पृष्ठ संख्या–119
3. राय पारसबाथ (1999) अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्म नारायण अग्रवाल
4. सिंह किरन और सिंह, एस0 एन0 (2012) प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, लखनऊ, पृष्ठ संख्या–142, 143, 144 www.shodhganga.com
5. मालवीय, राजीव (2013) उदीगगात भारतीय समाज में शिक्षक, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ संख्या–597
6. पाठक, रमेश प्रसाद (2015) उदीयमान आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा, आगरा विकास, पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, पृष्ठ संख्या–28
7. आस्थाना (2015) शिक्षा में मापन मूल्यांकन, आगरा, विनोद प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–440–445
8. कपिल एच0 के0 (2016) अनुसन्धान विधियां, हर प्रसाद भार्गव, पृष्ठ संख्या–75–76
9. गुप्ता एस0 पी0 (2016) अनुसन्धान संदर्शिका, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ संख्या–312–324, 345–362
10. कपिल एच0 के0 एवं सिंह ममता (2016) : सांख्यिकीय के मूल तत्व, आगरा, अग्रवाल, पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या–57–60
11. मंगल, एस0के0 और मंगल, शुभ्रा (2017) : व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसन्धानों विधियां, हरियाणा; पी0वी0 पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या–75–80
12. शर्मा, आर0ए0 (2017) शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो, पृष्ठ संख्या–23, 49, 194–2015
13. मदान, पूनम (2014) भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास तथा समस्याएं, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या–317–335